नजानू की कहानियां

१

निकोलाई नोसोव



फूलनगर के बौने



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१

फूलनगर के बौने

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





क़िस्से-कहानियों के एक नगर में कुछ बौने रहते थे। उनको बौना इसलिए कहते थे कि वे बहुत ही छोटे थे। हर एक बौने का क़द बस खीरे के बराबर होता था। उनके नगर में बहुत सारी सुंदर-सुंदर चीज़ें थीं। हर घर के चारों ओर फूल खिले रहते थे: डेज़ी, कैमोमाइल, डैन्डेलियन। यहां तक कि उस नगर की सड़कों के नाम भी फूलों के नाम पर रखे गये थे: ब्लू-बेल्स सड़क, कैमोमाइल वीथिका, कार्नफ़्लार तरुपथ। और नगर का भी नाम था फूलनगर। यह नगर एक छोटी-सी नदी के तट पर बना था। बौनों ने इस नदिया का नाम रखा था खीरेवाली नदिया क्योंकि इसके किनारे पर बहुत से खीरे उगते थे।

नदी के उस पार एक जंगल था। बौने भूर्ज की छाल से छोटी-छोटी किश्तियां बनाते और उन पर बैठकर नदिया को पार करके जंगल में जाते थे। वहां वे जंगली फल, खुम्बियां और अख़रोट इकट्ठा करते थे। जंगली फलों को जमा करना बहुत कठिन था क्योंकि बौने बहुत ही छोटे-छोटे थे। अख़रोट को तोड़ने के लिए उन्हें ऊंची-ऊंची झाड़ियों पर चढ़ना पड़ता था और अपने साथ आरी भी ले जानी पड़ती थी। कोई भी बौना अपने हाथों से अख़रोट को नहीं तोड़ पाता था।



उन्हें रेती से रगड़ने की ज़रूरत होती थी। इसी प्रकार खुम्बियों को भी आरी से काटना पड़ता था। बौने पहले खुम्बियों को बिलकुल जड़ के पास से काटते, फिर उनके टुकड़े-टुकड़े करते, और उसके बाद एक-एक टुकड़े को अलग-अलग घसीटकर, उन्हें घर ले जाते।

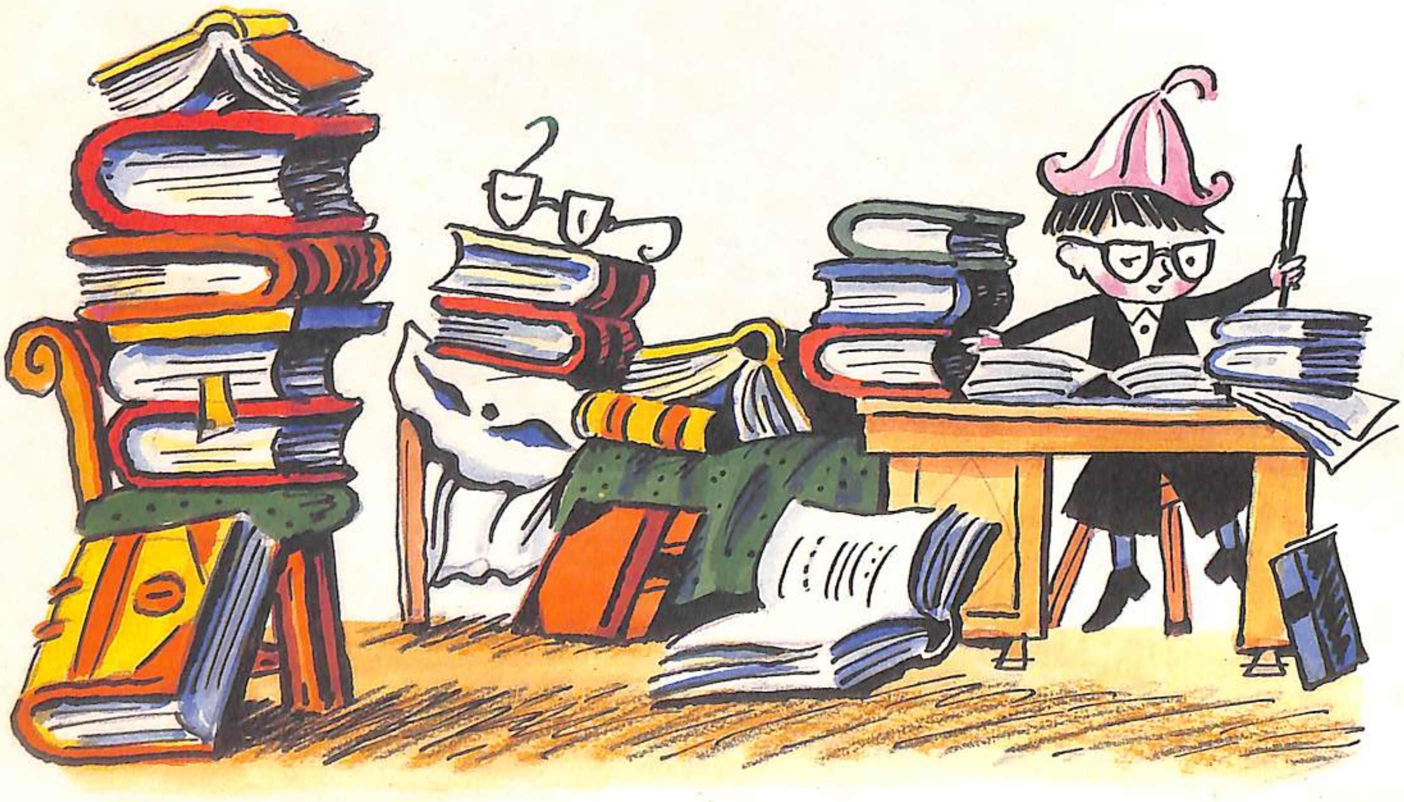
सब के सब बौने एक ही प्रकार के नहीं थे। बौनों में से कुछ का नाम था छुटका, और कुछ का नाम था छुटकी। छुटके ज़्यादातर या तो लम्बी पतलूनें पहनते, जिनके पांयचे वे अपने जूतों में घुसेड़ लेते थे, या फिर गेलिस लगी छोटी-छोटी निकरें पहनते थे। छुटकियों को रंगबिरंगी और चटकीले कपड़ों से बनी फ़ाकें पहनना अच्छा लगता था। छुटके बाल बनाने के झंझट में नहीं पड़ना चाहते थे। इसलिए उनके बाल छोटे-छोटे होते थे जबकि छुटकियों के बाल लम्बे होते, इतने लम्बे कि उनकी कमर तक पहुंचते थे। छुटकियों को बालों को तरह-तरह से सजाना-संवारना अच्छा लगता था। वे अपने बालों की चोटियां बांधतीं, चोटियों में रिबन लगातीं और सर पर तितली-सी बनाती थीं। बहुत से छुटकों को इस पर बड़ा गर्व था कि वे छुटके हैं। वे ज़्यादातर छुटकियों से मेल-जोल नहीं रखते थे। छुटकियों को भी इस पर नाज़ था कि वे छुटकियां हैं और वे भी छुटकों के साथ दोस्ती करना पसंद नहीं करती थीं। अगर सड़क पर किसी छुटकी की भेंट किसी छुटके से हो जाती तो छुटकी दूर से ही उसे देखकर सड़क पार करके दूसरी ओर चली जाती थी। यह वह ठीक ही करती थी, क्योंकि छुटकों के बीच ऐसे बहुत-से होते थे जो ज़रूर कोई छेड़-छाड़ करते थे। छुटके अवश्य छुटकियों से कोई बुरी लगनेवाली बात कहते। हो सकता है वे उनको धक्के मारते, या फिर इससे भी बुरा व्यवहार करते और वे छुटकियों की चोटियां खींच लेते। सब छुटके तो इस



तरह के नहीं थे, मगर किसी के माथे पर तो लिखा नहीं होता कि वह कैसा है, इसलिए छुटकियों ने यह सोच लिया था, कि पहले से ही सड़क की दूसरी ओर चले जाना छुटकों के बीच में फंसने से ज़्यादा ठीक है। इसलिए बहुत-से छुटकों ने छुटकियों को नकचढ़ी नाम दे रखा था – क्या ख़ूब बेहूदा नाम चुना था उन्होंने! बहुत-सी छुटकियों ने छुटकों को छेड़ख़ोर तथा कई दूसरे अपमानजनक नाम दे रखे थे।

हमारी कहानी पढ़नेवाले लोग फ़ौरन कहेंगे कि यह सब मनगढ़ंत बातें हैं, कि जीवन में ऐसे छुटके नहीं पाये जाते। पर यह तो कोई भी नहीं कह रहा है कि वे जीवन में पाये जाते हैं। मगर जीवन की बात और है, और क़िस्सों-कहानियों के नगर की बात और। क़िस्सों-कहानियों के नगरों में सब कुछ पाया जा सकता है।

ब्लूबेल्स सड़क के एक छोटे-से घर में सोलह छुटके-बौने रहते थे। इनमें सबसे प्रमुख था एक छुटका-बौना जिसका नाम था जानू। उसको जानू नाम इसलिए दिया गया था कि वह हर चीज़ के बारे में जानता था। उसको सब चीज़ों के बारे में ज़्यादा जानकारी इसलिए थी कि वह तरह-तरह की किताबें पढ़ता रहता था। ये किताबें उसके यहां मेज़ पर, मेज़ के नीचे, पलंग पर, पलंग के नीचे हर जगह बिखरी रहती थीं। उसके कमरे में कोई भी जगह ऐसी नहीं थी जहां किताबें न पड़ी हों। किताबों को पढ़-पढ़कर जानू बहुत समझदार बन गया था और इस कारण सब लोग उसकी बात





मानते थे और उससे बहुत प्रेम करते थे। वह हमेशा काले कपड़े पहनता था और जब वह मेज़ के पास बैठता और अपनी नाक पर ऐनक चढ़ाकर कोई किताब पढ़ने लगता तो वह बिलकुल प्रोफ़ेसर लगता था।

इसी घर में एक प्रसिद्ध डाक्टर भी रहते थे जिनका नाम था टिकियावाला। वह बौनों की सारी बीमारियों का इलाज करते थे। वह हमेशा डाक्टरोंवाला सफ़ेद कोट और सर पर फुंदने लगी सफ़ेद टोपी पहने रहते थे। इस घर में एक बहुत योग्य मिस्तरी पेंचू भी खांचू नाम के अपने मददगार के साथ रहता था। और इसी घर में रहते थे शक्कर शरबतिया जिनका यह नाम इसलिए मशहूर हो गया था कि उनको सोडे के पानी में शरबत मिलाकर पीना बहुत पसंद था। वह बहुत ही तमीज़दार बौने थे। जब उन्हें शक्कर शरबतिया नाम से पुकारा जाता तो उन्हें यह बहुत भाता था, मगर अगर उन्हें सिर्फ़ शरबतिया कहकर सम्बोधित किया जाता, तो यह उनको अच्छा नहीं लगता था। इसी घर में एक शिकारी भी रहता था, जिसका नाम था गोलीबाज़। शिकारी के पास एक छोटा-सा कुत्ता था जिसका नाम था गुर्रा और एक बन्दूक़ भी थी जो सिर्फ़ काग दाग़ सकती थी। इन सबों के साथ ही रहता था एक कलाकार, जिसका नाम था ट्यूबेश, एक संगीतकार जिसका नाम था बाजाबाज़। और कई बौने भी इसी घर में रहते थे: जल्दबाज़, श्रीमान बड़बड़िया, ख़ामोशू, गुलगुला, खोऊ, दो भाई – अगरकहीं और होशायद। मगर इन सबमें सबसे ज़्यादा मशहूर था एक बौना जिसका नाम था नजानू। उसको नजानू इसलिए कहा जाता था कि वह किसी भी चीज़ के बारे में कुछ नहीं जानता था।



नजानू बहुत ही चटक नीली टोपी पहनता था और उसके साथ कनेरी चिड़िया जैसे पीले रंग का पतलून और नारंगी रंग की क़मीज़, जिस पर वह हरी टाई बांधता था। उसको चटक रंग बहुत पसंद थे। इस तरह एक तोते की तरह सज-धजकर नजानू पूरे दिन सारे नगर में मटरगश्ती





करता फिरता था और बेसर-पैर की कहानियां गढ़कर सब को सुनाता रहता था। इसके अलावा वह छुटकियों को सताता भी था। इसी कारण छुटकियां अगर दूर से ही उसकी नारंगी क़मीज़ देख लेतीं तो वे फ़ौरन घूमकर दूसरी ओर चलने लगतीं और घर में जाकर छुप जाती। नजानू का एक दोस्त था जिसका नाम था चिथड़िया। वह डेज़ी सड़क पर रहता था। चिथड़िया के साथ नजानू घंटों गपशप कर सकता था। वे दोनों दिन में बीस बार झगड़ते और दिन में बीस बार उनमें मेल हो जाता।

नजानू की शोहरत एक घटना के बाद ख़ास तौर से बढ़ गयी।

एक बार नजानू नगर में चक्कर लगा रहा था और अचानक खेत में जा पहुंचा। उस खेत के आस-पास कोई नहीं था। उस समय वहां एक भौंरा उड़ रहा था। अनजाने में वह भौंरा सीधे नजानू की ओर उड़ आया और उसकी गुद्दी से टकरा गया। नजानू उसके वार से धरती पर मुंह के बल गिर पड़ा। उसी क्षण भौंरा उड़कर चला गया और ओझल हो गया। नजानू उठ खड़ा





हुआ और चारों तरफ़ यह देखने का प्रयत्न करने लगा कि उसको किसने टक्कर मारी थी। मगर चारों ओर कोई भी नहीं था।

"मुझको टक्कर किसने मारी?" नजानू ने सोचा। "हो सकता है कि ऊपर से कोई चीज़ नीचे गिरी हो।"

उसने अपना सर उठाकर ऊपर देखा मगर वहां भी कुछ नहीं था। सिर्फ़ सूरज बड़ी तेज़ी से नजानू के सर के ऊपर चमक रहा था।

"इसका मतलब है कि सूरज से ही कोई चीज़ गिरकर मेरे ऊपर वार कर गयी," नजानू ने सोचा। "मेरे ख़्याल में सूरज का ही एक टुकड़ा टूटकर मेरे सर पर आ गिरा होगा।"

नजानू घर लौट पड़ा। रास्ते में उसकी मुलाक़ात अपने जान-पहचान के एक बौने से हुई जिसका नाम था शीशू।

शीशू बहुत प्रसिद्ध खगोलज्ञ था जो टूटी हुई बोतलों की किरचों से चीज़ों को बड़ा दिखाने-वाला शीशा बना सकता था। जब वह इस शीशे से अलग-अलग चीज़ों को देखता तो वे चीज़ें बहुत बड़ी दिखायी देती थीं। ऐसे ही कई शीशों से शीशू ने एक दूरबीन बनायी जिससे चांद और सितारों को देखा जा सकता था। इसी तरह शीशू खगोलज्ञ बन गया।

"सुनो शीशू," नजानू ने खगोलज्ञ से कहा, "जानते हो, मेरे साथ कैसी घटना घटी है: सूरज का एक टुकड़ा गिरकर मेरे सर आ टकराया।"

"क्या कह रहे हो, नजानू?" शीशू हंसकर बोला, "अगर सूरज से कोई टुकड़ा गिरता तो वह तुमको चपाती बना देता। सूरज तो बहुत बड़ा है। वह तो हमारी पूरी धरती से भी बहुत ज़्यादा बड़ा है।"

"यह हो ही नहीं सकता," नजानू ने जवाब दिया। "मुझे तो लगता है कि सूरज एक तश्तरी से ज़्यादा बड़ा नहीं है।"

"तुमको सिर्फ़ ऐसा लगता ही है क्योंकि सूरज हमारी धरती से बहुत दूर है। वह एक बहुत बड़ा, दहकता गोला है। मैंने अपनी दूरबीन से ऐसा ही देखा है। अगर सूरज का एक छोटा-सा टुकड़ा भी गिर पड़े तो वह हमारे पूरे नगर को बरबाद कर सकता है।"

"बाप रे बाप!" नजानू ने जवाब दिया। "मैं यह नहीं जानता था कि सूरज इतना बड़ा है। मैं अभी जाकर सबको बताता हूं – हो सकता है कि उन्होंने सूरज के बारे में यह बात कभी न सुनी हो। फिर भी तुम अपनी दूरबीन से सूरज को एक बार फिर से देखो। हो सकता है सचमुच उसका एक कोना टूट गया हो!"





नजानू अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे जो लोग भी मिलते उनसे वह यह कहता :

"भाइयो, आप जानते हैं सूरज कैसा है? वह हमारी धरती से भी बहुत ज़्यादा बड़ा है। ऐसा है सूरज! और सुनिये, भाइयो, सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है और वह सीधा हमारी ओर आ रहा है। बहुत जल्द ही वह हमारे ऊपर गिर पड़ेगा और हम सबको कुचल डालेगा। बड़ी भयंकर घटना घटेगी! जाइये, जाकर शीशू से पूछ लीजिये।"

सब नजानू की बात पर हंसते क्योंकि सब जानते थे कि नजानू कितना गप्पी है। मगर नजानू जितनी जल्दी उससे हो सका, घर के सब लोगों के पास दौड़कर गया और उनसे चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा :

"भाइयो, बचिये! टुकड़ा गिरने ही वाला है!"

"कैसा टुकड़ा?" लोगों ने उससे पूछा।

"टुकड़ा, भाइयो! सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है। बहुत जल्द ही वह टुकड़ा बड़े धमाके



से गिरेगा और उससे सब दब जायेंगे। आप जानते हैं सूरज कैसा है? वह हमारी पूरी धरती से भी बहुत बड़ा है!"

"तुम यह क्या मनगढ़ंत उड़ा रहे हो!"

"मैं मनगढ़ंत बात नहीं कह रहा। मुझे यह सब शीशू ने बताया है। उसने अपनी दूरबीन से सूरज को देखा है।"

सब आंगन में निकल आये और सूरज की ओर देखने लगे। जब तक उनकी आंखों से आंसू नहीं बहने लगे तब तक वे सूरज को घूरते ही रहे। आंखें चकाचौंध हो जाने के कारण सब लोगों को ऐसा लगा जैसे सचमुच सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है। नजानू तो चीखे ही जा रहा था:

"अगर बच सकते हैं तो बचिये! सर्वनाश होने ही वाला है!"

सब लोगों ने अपनी-अपनी चीज़ें जल्दी-जल्दी बटोरनी शुरू कर दीं। ट्यूबेश ने अपने रंग और बुरुश इकट्ठा किये और बाजाबाज़ ने अपने बाजे: वायोलिन, बलालायका और पीतल का





बिगुल। डाक्टर टिकियावाला अपने घर में इधर-उधर दौड़कर दवाइयों का सफ़री बैग ढूंढ़ने लगे जो पता नहीं उन्होंने कहां रख दिया था। गुलगुले ने अपने बरसाती जूते और छतरी उठा ली और फाटक की ओर दौड़ पड़ा मगर वहां जानू की आवाज़ सुनायी दी। वह कह रहा था:

"भाइयो, शांति से काम लीजिये! डरने की कोई बात नहीं है। आप क्या यह नहीं जानते कि नजानू बड़ा गप्पी है? उसने यह बात खुद ही गढ़ी है।"

"बात खुद गढ़ी है?" नजानू चिल्लाकर बोला, "जाओ, जाकर शीशू से पूछ लो।"

सब लोग दौड़कर शीशू के पास पहुंचे और तब बात साफ़ हुई कि नजानू ने सारी कहानी





खुद ही तैयार कर ली थी। खूब हंसे सब लोग! सब नजानू पर हंस रहे थे और कह रहे थे:

"हमें ताज्जुब है कि हमने तुम पर विश्वास कैसे कर लिया!"

"और मुझे क्या खुद ताज्जुब नहीं है!" नजानू ने जवाब दिया। "मुझे तो अपनी बात पर कितना विश्वास था।"

कैसा अनोखा था यह नजानू!







ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002330-0